घर पर ही लग रही हैं कक्षाएं

फोटो: अमित मल्होत्रा

जेन वार्नर मल्होत्रा

अमेरिकी बच्चों के लिए निःशुल्क और सर्वसुलभ शिक्षा की सुविधा उपलब्ध होने के बावजूद अनेक माता-पिता अपने बच्चों को घर पर ही पढ़ाना पसंद करने लगे हैं।

दिसंबर की सुबह धीरे-धीरे सूरज उगा तो मेरे बच्चे भी उठे। हमें कोई जल्दी नहीं थी। हालांकि स्कूलों में पढ़ाई चल रही थी, लेकिन हमारा स्कूल नई सुविधाजनक जगह पर आ गया था, यानी हमारे घर पर। अब हमें न लंच पैक करने की हड़बड़ी थी और न बस्ता खोजने, अनुमति पत्रों पर हस्ताक्षर करने, बाल संवारने, कार में बैठ कर सबको बेल्ट कसने और ट्रैफिक को पछाड़ते हुए घंटी बजने से पहले स्कूल पहुंचने की।

''हम आज क्या कर रहे हैं?'' मेबिल ने पूछा। ''भूकंपों के बारे में पढ़ेंगे,'' उसकी बड़ी बहन हेलन ने जवाब दिया। ज़ो ने बात में बात मिलाकर कहा, ''और भ्रंश यानी फॉल्ट लाइन पर घूमेंगे।'' छह सदस्यों का हमारा परिवार हाल ही में कैलिफ़ोर्निया आ गया था। पड़ोसियों ने सर्वोत्तम स्कूलों के बारे में जो कुछ बताया था, उनकी खोज का वक्त नहीं था और हम शैक्षिक सत्र के बीच में अपने बच्चों का एडमिशन कराने में भी झिझक रहे थे। हमने उन्हें घर पर ही पढ़ाने का निश्चय किया। हम ऐसे कुछ परिवारों को जानते थे जिन्होंने अपने बच्चों को घर पर ही शिक्षा दी और एक साथ पूरे परिवार के ज्ञानार्जन का यह विचार हमें जंच गया। अब हमारे पास अपने सुंदर पास-पड़ोस को साथ-साथ देखने-समझने का वक्त भी अधिक था और हम प्रशांत महासागर, सैन फ्रांसिस्को, मोंटेरे खाड़ी तथा सांता क्रूज पर्वतमाला के रेडवुड जंगलों को देखने आसानी से जा सकते थे। और हां, हम सैन एंड्रियाज फॉल्ट को भी देख सकते थे जिस पर कैलिफ़ोर्निया के तमाम भूकंपों का दोष मढ़ा जाता है।

अमेरिका में ऐसे परिवारों की संख्या लगातार बढ़ रही है जो अपने

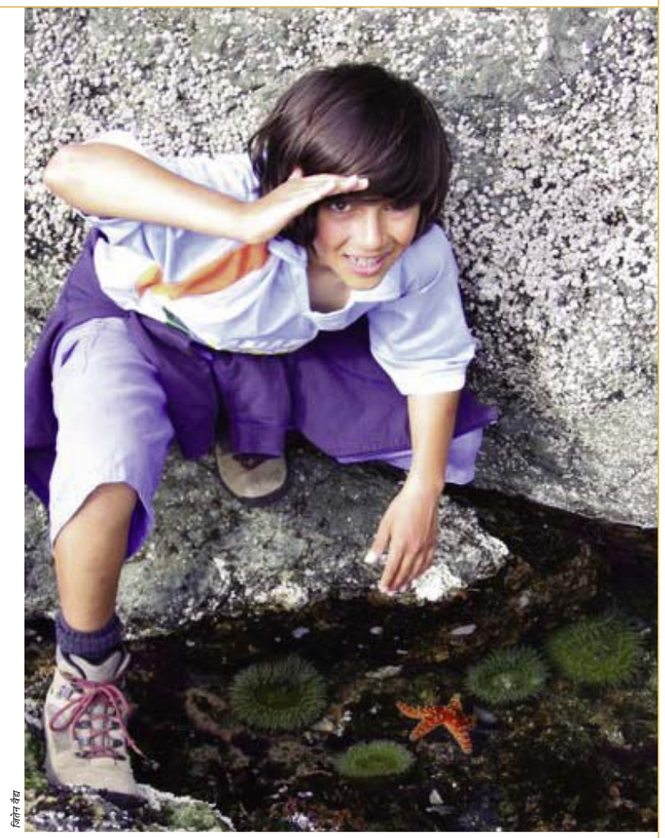

फिनिक्स वैद्य

ईनिका हल्लहरा © ए.पी. ऑब्ज़र्वर यू.के.

बिल्कुल ऊपर बाएं: रेगिस्तान के जीवन के बारे में अध्ययन करने के क्रम में अमित मल्होत्रा और उनके बच्चे फिनिक्स, एरिज़ोना में चट्टानों पर किए गए प्राचीन उत्कीर्णन को देखने के लिए जा रहे हैं।

बिल्कुल बाएं: सैंटा क्लैरा, कैलिफ़ोर्निया में सार्वजनिक पुस्कालय के बाहर खेलते हुए मल्होत्रा परिवार के बच्चे।

बाएं: सैराटोगा, कैलिफ़ोर्निया में वार्षिक सरसों उत्सव के दौरान माया जैन और ज़ो मल्होत्रा कुछ बच्चों के साथ एक गाड़ी में बैठकर बागानों के बीच से जा रहे हैं।

सबसे ऊपर दाएं: एलीसिया और जितेन वैद्य के बेटे को मेंडोसिनो, कैलिफ़ोर्निया के निकट कुंडों में स्टारफ़िश और एनीमोन तलाशने में कामयाबी मिली।

दाएं: कैथोलिक होमस्कूलर्स ऑफ़ न्यू जर्सी के निदेशक डिएन टोलर चेरी हिल स्थित अपने घर पर अपने बच्चों जोशुआ (बाएं से), अलेक्सांद्र, माइकल और जॉन के साथ।

ब्रायन मेरो © ए.पी. - ब्लैक्स्टोन फ़ो. द पेकेट-लिथुवा

जैक मार्शल © ए.पी. - ब्लैक्स्टोन फ़ो.

बाएं: सेंट जॉन, इंडियाना स्थित अपने घर पर कोलिन शिजल (दाएं) कैलकुलेटर पर हाथ आजमाते हुए जबकि उनकी बहिन अंबर एक पेंटिंग पर काम कर रही हैं। ये बच्चे होमस्कूलिंग की उस शाखा के तहत पढ़ाई कर रहे हैं जिसे अनस्कूलिंग कहते हैं।

दाएं: ग्रोटॉन, कनेटिकट में एंड्रू ओडोर (बाएं) गणित की पढ़ाई करते हुए जबकि उसके भाई जैरेड को उसकी मां कैरेन कुछ समझा रही हैं। कैरेन ओडोर दक्षिणी-पूर्वी कनेटिकट के क्रिश्चियन होमस्कूलर्स ऑर्गेनाइजेशन की समन्वयक हैं।

बच्चों को घर पर ही पढ़ाना पसंद कर रहे हैं। अमेरिकी शिक्षा विभाग द्वारा वर्ष 2007 में जारी की गई एक रिपोर्ट में बताया गया है कि 5 से 17 वर्ष की उम्र के लगभग 15 लाख स्कूल जाने लायक बच्चों को घर पर ही शिक्षा दी जा रही है। केवल चार वर्ष के भीतर इस संख्या में 4,12,000 की वृद्धि हुई। वर्तमान में ऐसे बच्चों की संख्या करीब 20 लाख हो चुकी है। इस रिपोर्ट के अनुसार घर पर ही शिक्षा देने का कारण धार्मिक अथवा नैतिक सीख देना, पारिवारिक मेल-मिलाप, स्कूलों में पढ़ाने के तरीके से संतुष्ट न होना, पढ़ाने के लिए बच्चों की विशेष ज़रूरत और घर पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देकर पढ़ाने की इच्छा थी। इससे पहले 2004 में जारी रिपोर्ट में कहा गया था कि घर पर ही शिक्षा देने का मुख्य कारण स्कूलों का वातावरण था।

एक आम अमेरिकी बच्चा पास-पड़ोस के पब्लिक स्कूल में 5 से 18 वर्ष की उम्र के बीच किंडरगार्टन से लेकर बारहवीं तक की नि:शुल्क शिक्षा प्राप्त करता है। हर बच्चे का स्कूल जाना कानूनी तौर पर ज़रूरी है, फिर वह चाहे पब्लिक या प्राइवेट स्कूल हो या घर पर पढ़ाना हो। इसके लिए हर राज्य के अपने विशेष नियम हैं। राज्य, काउंटी, शहर अथवा स्थानीय स्कूल जिला सरकारें पाठ्यक्रम के दिशा-निर्देश, शैक्षिक वर्ष के दिनों की संख्या, शिक्षकों का वेतन तथा अन्य बातें तय करती हैं। पब्लिक स्कूल की पढ़ाई में विभिन्न राज्यों और यहां तक कि शहरों और पास-पड़ोस तक में भारी अंतर होता है। प्राय: धनी लोगों के इलाके में बेहतर स्कूल होते हैं जहां शिक्षा पर ज़्यादा स्थानीय टैक्स डॉलर खर्च किए जाते हैं और मांग अधिक होने के कारण वहां रहने की कीमतें भी बहुत ऊंची होती हैं।

अमेरिका में घर पर ही पढ़ाने की प्रथा बढ़ रही है लेकिन इस पर विवाद भी खूब हो रहा है। जो लोग टैक्स देने या सरकार के खिलाफ हैं, वे बच्चों को सहायता प्राप्त संस्थाओं या स्कूलों में पढ़ाने के बजाय घर पर ही पढ़ा लेते हैं। कुछ धार्मिक कट्टरपंथी अपने बच्चों को घर के अलग-थलग और बंद माहौल में पढ़ाना चाहते हैं। आलोचक कहते हैं कि दूसरों के विचारों से दूर रह कर ये बच्चे केवल संकीर्ण शिक्षा प्राप्त करते हैं। साथ ही, यह भी नहीं पता कि ऐसे परिवारों में लड़कियों को भी लड़कों के समान ही शिक्षा दी जा रही है या नहीं, और यह भी कि उन्हें अमेरिकी नागरिकों के लिए जीवन में उपलब्ध सभी सुविधाओं की जानकारी मिल रही है या नहीं। कानूनवेत्ता बच्चों की रुचि को ध्यान में रखकर कुछ बातों को नजरंदाज भी कर देते हैं लेकिन बच्चों को घर पर पढ़ाने वाले माता-पिता अपने ही मूल्यों को ध्यान में रख अपनी मर्जी से पढ़ाते हैं।

कई अमेरिकी नागरिकों के विचार में घर पर पढ़ाना उनके परिवार के लिए कोई व्यावहारिक विकल्प नहीं है। अगर परिवार में माता या पिता में से केवल कोई एक ही है या माता-पिता दोनों ही नौकरी करते हैं तो उनके लिए गणित या विज्ञान पढ़ाना तो दूर, अपने बच्चों के साथ बैठकर भोजन करना तक मुश्किल है। वर्ष 2003 के शिक्षा विभाग के सर्वेक्षण के अनुसार आधे से अधिक परिवारों में माता-पिता दोनों थे और केवल एक नौकरी में था।

वाशिंगटन डी.सी. में पांच बच्चों की मां, एमी थॉमसन अपने बच्चों को पास के ही पब्लिक स्कूल में भेजती हैं, लेकिन बच्चों को घर पर पढ़ाने वालों की पसंद से भी अनभिज्ञ नहीं है। वह कहती हैं, ''मैं इस बात का समर्थन करती हूं कि माता-पिता को अपने बच्चों को घर पर पढ़ाने का अधिकार है, लेकिन इसके लिए जवाबदेही भी होनी चाहिए। कुछ लोगों का कहना है कि घर पर पढ़ने वाले बच्चे ज़्यादा घुलते-मिलते नहीं, लेकिन मेरे दोनों भाई अपने बच्चों को घर पर ही पढ़ाते हैं और वे हर समय दूसरे परिवारों के साथ खूब बातें करते रहते हैं। इस मामले में माता-पिता को इस बात के लिए थोड़ा अधिक प्रयास करना पड़ता है कि उनके बच्चों को दूसरों से मिलने-जुलने के अधिक अवसर मिल सकें जबकि पड़ोस के स्कूल में तमाम बच्चे स्वयं स्कूल में ही होते हैं।

उनके पति डेविड पब्लिक स्कूलों के कर्मचारी हैं। वह कहती हैं, ''वे पब्लिक स्कूलों का समर्थन करते हैं और घर पर शिक्षा देने के हिमायती नहीं हैं। हम समझते हैं कि हमारे परिवार के लिए एक अच्छा पब्लिक स्कूल बेहतर विकल्प है। लेकिन, माता-पिता के लिए यह भी ज़रूरी है कि वे अपने बच्चे के स्कूल से जुड़े रहें, शिक्षकों को जानें-समझें और यह भी जानने की कोशिश करें कि कक्षाओं और खेलकूद के मैदान में क्या-कुछ हो रहा है। हम इस बात को प्राथमिकता दे रहे हैं कि अपने मूल्य अपने बच्चों को सौंपे और स्कूल के बाद अपना अधिक से अधिक समय उनके साथ बिताएं। घर पर शिक्षा देने के कुछ फायदे हैं, जिन्हें आप अपना सकते हैं और पब्लिक स्कूल में पढ़ाने का लाभ भी उठा सकते हैं। साथ ही, मुझे लगता है कि हमारे बच्चों के सोच में एक खास लचीलापन और आज़ादी की भावना है जो स्कूली शिक्षा के तरीके से ही आती है।''

लेकिन, भारत में अपेक्षाकृत काफी कम परिवार घर पर शिक्षा देते हैं और अमेरिकी परिवारों की तरह वे भी इसका प्रमुख कारण पब्लिक स्कूलों के वातावरण से संतुष्ट न होना बताते हैं। ऑनलाइन चैट फोरमों में वे धौंस जमाने, बुरी संगत, पढ़ाई के भारी दबाव और रचनात्मक अवसरों की कमी जैसी शिकायतें करते हैं।

अमेरिकी शिक्षा विभाग की वर्ष 2004 की रिपोर्ट के अनुसार ''घर पर शिक्षा देने का कारण प्राय: अन्य स्कूलों का वातावरण बताया गया जिसमें सुरक्षा, नशीली दवाइयां या बुरी संगत का दबाव शामिल है। घर पर शिक्षा पाने वाले विद्यार्थियों में से 85 प्रतिशत विद्यार्थी अन्य स्कूलों के वातावरण के बारे में अपने माता-पिता के विचारों के कारण घर में पढ़ रहे थे।''

जेनिफर ग्लीज कई वर्ष जर्मनी में बिताने के बाद वर्ष 2007 में अमेरिका लौटीं। उन्हें हेंडर्सनविले, नॉर्थ कैरोलाइना में नजदीक के पब्लिक स्कूल में बच्चों के प्रथम वर्ष की पढ़ाई से निराशा हुई। वह कहती हैं, ''प्राथमिक स्कूलों में कला की शिक्षा नहीं दी जाती और हाईस्कूल तक भाषाएं भी नहीं पढ़ाई जाती हैं। मेरे दोनों बच्चे होशियार हैं और मैं देखती थी दिन भर वे पढ़ाई में कितना व्यस्त रहते थे, कतारों में खड़े रहते, बाथरूम जाते और उन साथी बच्चों के लिए रुके रहते जिन्हें कुछ पता नहीं होता था, ताकि कक्षा आगे बढ़े। और फिर, वहां आराम करने का समय ही कहां था या बहुत कम था।''

इस वर्ष उन्होंने और उनके जर्मन पति ने अपने 11 वर्ष के बेटे और 8 वर्ष की बिटिया को अपने मुहल्ले के अन्य परिवारों की तरह ही घर पर पढ़ाने का निश्चय किया है। पांच वर्ष पहले, जब वे वर्मोंट में रह रहे थे तो उन्होंने अपने बेटे को पहली ग्रेड की शिक्षा घर पर ही दी थी जिसका बड़ा लाभ मिला। ग्लीज कहती हैं, ''हमें विश्वास है कि हम अपने बच्चों को पढ़ाई का बेहतर वातावरण दे सकते हैं। साथ ही उन्हें अपने संपूर्ण व्यक्तित्व को पहचानने के भी कहीं और अच्छे अवसर दे सकते हैं ताकि वे अपने मन, शरीर और आत्मा को भी समझ सकें।

सनीवेल, कैलिफोर्निया में दो बच्चों के पिता जितेन वैद्य को जब उनकी पत्नी एलिसिया ने बेटे को घर में पढ़ाने का सुझाव दिया तो उन्हें संशय हुआ। ''अमेरिका में तमाम भारतीय परिवार शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। शिक्षा उनके दिल से जुड़ी रहती है। भारतीय संस्कृति में मैंने सीखा था कि शिक्षक को सम्मान देना चाहिए और गुरू को सबसे अधिक ज्ञान होता है। इन मूल्यों के कारण मेरे लिए यह मानना एक चुनौती बन गई कि मैं शिक्षकों से बेहतर जानता हूं और मेरे बच्चों के लिए सबसे अच्छा क्या है यह मैं अधिक अच्छी तरह समझता हूं।''

अब सात वर्ष बाद जब वे इस बारे में सोचते हैं तो उन्हें लगता कि उन्होंने सही निर्णय लिया। ''मुझे भी मेरी मां ने घर पर पढ़ाया था और मैंने गणित के तमाम सवाल अपने आप हल किए। इसलिए अपने बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा के लिए परंपरागत स्कूली पढ़ाई अपनाना मैंने ज़रूरी नहीं समझा। ज़्यों-ज़्यों वर्ष बीतते गए, मैं देख रहा था कि मेरा बच्चा कितना कुछ सीखता जा रहा है। उसमें जिज्ञासा थी, वह उत्साह से भरा हुआ और व्यस्त था। वह किसी और के बनाए हुए टाइम टेबल को नहीं अपना रहा था और उसे कोई चिंता नहीं थी। अंतत: मुझे यही लगा कि घर पर शिक्षा देने का प्रभाव पड़ रहा है और अब मुझे इसके बारे में कोई संशय नहीं है।

वैद्य को इससे सबसे बड़ा पुरस्कार क्या मिला? ''वह जानते हैं, बच्चे को जानने और उससे जुड़ने का सुअवसर।''

शैंपेन, इलिनॉय की चार बच्चों की मां एमी चैसर इस बात से सहमत हैं। उन्होंने हाईस्कूल टीचर का प्रशिक्षण प्राप्त किया है और वह अपने चारों बच्चों को घर पर शिक्षा देती हैं। गर्मियों में एक दिन उनका 8 वर्ष का बच्चा जब स्कूल खुलने की बात सुन कर गहरी चिंता में पड़ गया तो उन्होंने उसके पास बैठ कर उसकी बात सुनी। ''वह स्कूल से ऊब चुका था, अन्य बच्चों की प्रतीक्षा करते-करते निराश हो चुका था और आए दिन की जाने वाली छेड़खानी से घबराया हुआ था। उससे पहले साल मैंने किसी शिक्षक की अनुपस्थिति में चौथी ग्रेड की कक्षा को पढ़ाया था। और, देखा था कि बहुत अच्छे स्कूल की अच्छी-खासी कक्षा में भी यही सब कुछ होता है।'' उनकी सिस्टर-इन-लॉ सहित उनके चर्च से जुड़े अनेक परिवार बच्चों को घर पर पढ़ा रहे थे। इसके बारे में पढ़कर वह बहुत उत्साहित हुईं। वह कहती हैं, ''मैं अपने बच्चों के साथ रहना और उनसे सीखना चाहती थी। और, अपने बच्चों को सिखाने का आनंद उठाना चाहती थी।''

बहुत से राज्यों में स्थानीय स्कूल जिले में पंजीकरण, उपस्थिति के रिकॉर्ड, कामकाज के नमूनों का ब्यौरा और बच्चों की वार्षिक परीक्षाएं ज़रूरी होती हैं।

बच्चों को घर पर पढ़ाने का उनका निर्णय मुख्य रूप से धार्मिक नहीं था। धर्म में आस्था को वह व्यक्तिगत बात मानती हैं। उनका कहना है, ''ईश्वर मुझे घर पर पढ़ाने की शक्ति देता है।''

अपने बच्चे की शिक्षा की पूरी ज़िम्मेदारी उठाना बड़े साहस का काम है। अनेक राज्यों में कई अन्य चीज़ों की भी ज़रूरत पड़ती है जैसे स्थानीय स्कूल डिस्ट्रिक्ट में पंजीकरण, उपस्थिति तथा शैक्षिक काम के नमूनों का रिकॉर्ड रखना, बच्चों के वार्षिक टेस्ट, प्रमाणित शिक्षक द्वारा प्रगति का मूल्यांकन और प्राइमरी शिक्षक के लिए हाईस्कूल डिप्लोमा। वर्मोंट को कुछ ज़्यादा ही पाबंदियों का राज्य माना जाता है। वहां के घरेलू शिक्षा कानून के अनुसार घर पर शिक्षा देने वाले प्रत्येक परिवार को कम से कम दो वर्ष तक वार्षिक प्रगति मूल्यांकन कराना ज़रूरी है। अगर पहले दो वर्षों में विद्यार्थियों की प्रगति ठीक रहती है तो परिवार को आगे मूल्यांकन नहीं कराना पड़ता है। मूल्यांकन में या तो एक स्टैंडर्ड टेस्ट पूरा करना पड़ता है और वर्मोंट के किसी लाइसेंसधारक शिक्षक से रिपोर्ट लेनी पड़ती है या प्रत्येक विषय में विद्यार्थी की प्रगति दिखाने वाले पोर्टफोलियों के साथ माता-पिता या शिक्षक से रिपोर्ट ली जाती है। न्यू जर्सी में घर पर शिक्षा देने के लिए कानूनी पाबंदियां कम हैं और यदि बच्चा स्कूल के ही समान शिक्षा अन्यत्र या घर पर प्राप्त कर रहा है तो उसे अनिवार्य शिक्षा की पाबंदी से छूट मिल जाती है। लेकिन, स्थानीय स्कूल बोर्ड को अगर ऐसा प्रमाण मिल जाए कि बच्चा स्कूल शिक्षा के समान शिक्षा प्राप्त नहीं कर रहा है तो बोर्ड बच्चे को शिक्षा ना देने के लिए माता-पिता या अभिभावक के खिलाफ कार्रवाई कर सकता है।

चैसर का कहना है, ''फिलहाल इलिनॉय में किसी तरह की कागजी कार्रवाई या टेस्ट की ज़रूरत नहीं पड़ती है।'' और नॉर्थ कैरोलाइना? ग्लीज के लिए यह एक आसान प्रक्रिया थी: ''राज्य के नॉन पब्लिक एजुकेशन विभाग की वेबसाइट खोलो, फार्म निकाल कर भरो और उन्हें भेज दो। वह इसे स्वीकार कर लेते हैं और आपको स्वीकृति पत्र भेज देते हैं। बस, आप

ज़्यादा जानकारी के लिए:

अमेरिका में होमस्कूल

http://nces.ed.gov/pubs2006/homeschool/

बहुत से मुस्लिमों ने अपनाई होमस्कूल व्यवस्था

http://www.nytimes.com/2008/03/26/us/26muslim.html

होमस्कूल संसाधन

http://www.homeschool.com/

ग्रैगरी शॉकमान © पी. ब्लैक ब्लैक पी.

बाएं: बेवर्ली हार्टली और उनके पुत्र हैरीसन बुबांक, कैलिफ़ोर्निया में अपने घर के रसोईघर को होमस्कूल के क्लासरूम के रूप में इस्तेमाल करते हुए।

घर पर पढ़ाना शुरू कर दीजिए!'' हमारे मामले में कैलिफोर्निया के कानून के अनुसार हमने अपने घर पर ही एक प्राइवेट स्कूल के रूप में पंजीकरण कराया और उसमें स्कूल जाने की उम्र के तीन बच्चों की उपस्थिति दिखाई। पढ़ाई में बच्चों की प्रगति और पढ़ाने के कुल समय का रिकॉर्ड रखा। साथ ही प्रत्येक बच्चे के ग्रेड के लिए हमने राज्य के पाठ्यक्रम के दिशा-निर्देशों की समीक्षा की। हम घर पर शिक्षा देने वाली एक सहकारी संस्था और एक पार्क ग्रुप से जुड़ गए और उनके साथ मिल कर अपने समुदाय में वैकल्पिक शिक्षा के स्रोतों पर विचार-विमर्श किया।

हम अपने पहले पार्क दिवस पर अमेरिका के नामी संस्थानों में शिक्षित माता-पिताओं और शिक्षक रहे माता-पिताओं से मिले जो अपने घरों में स्वयं अपनी छोटी-छोटी कक्षाएं चला रहे हैं। पूर्व शिक्षकों के लिए पब्लिक स्कूलों द्वारा बच्चों की पढ़ाई की स्टैंडर्ड टेस्टिंग पर दिया जाने वाला जोर काफी महत्व रखता था। हमने कैलिफ़ोर्निया में घरेलू शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। इस राज्य में वैकल्पिक शिक्षा को ठीक समझा जाता है। कुछ माता-पिताओं ने अपने स्कूल जिले के स्वतंत्र अध्ययन कार्यक्रमों को अपनाना ठीक समझा। इसमें उन्हें मुफ्त पाठ्यक्रम प्राप्त होता है। उनके बच्चों के लिए सप्ताह में दो घंटे का ग्रुप क्लास टाइम मिल जाता है और कुछ मामलों में स्वीकृत पाठ्यक्रमों या सामग्री के लिए छात्रवृत्ति भी मिल जाती है। लेकिन कुछ माता-पिताओं ने इसका विरोध किया। वे सरकारी सहायता या नियंत्रण से अपने आप को पूरी तरह मुक्त रखना चाहते थे। कुछ परिवारों ने तो अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए परम्परागत शिक्षा प्रणाली से हटकर नया रास्ता चुना जिसमें बच्चे अपनी रुचि के अनुसार सीखने लगते हैं और माता-पिता केवल उनकी मदद करते हैं। दो परिवारों ने बिल्कुल परम्परागत रास्ता अपनाया और गणित, लैटिन, रॉबोटिक्स, पियानो आदि में प्रतिदिन औपचारिक रूप से पाठ पठाएं। दो अन्य परिवारों ने बीच का रास्ता अपनाया। वर्ष भर का पाठ्यक्रम पढ़ते हुए, सीखते-सीखते उससे थोड़ा हटकर, जीवन की अन्य आवश्यकताओं को पूरा करते हुए 'करो और सीखो' की नीति अपनाई तथा फील्ड भ्रमण पर बल दिया।

भूकंप मेरे लिए बिल्कुल नया विषय था और दिसंबर की उस सुबह हमने अमेरिका की भूगर्भ सर्वेक्षण वेबसाइट पर उनके बारे में जानकारी प्राप्त की। हमने बटन के केवल एक 'क्लिक' से कैलिफ़ोर्निया के भूकंपों का पता लगाया, उनके केंद्र, तीव्रता और आवृत्ति का पता लगाया और यह भी मालूम किया कि किसी खदान में विस्फोट क्यों होता है? प्लेट-टेक्टोनिक्स के बारे में विस्तृत चर्चा करने के बाद हमने सोचा कि अगर हमारे घर में ऐसा कुछ हो गया तो हम क्या करेंगे? 'घबराओ मत!' राज्य की सुरक्षा गाइड में इस बारे में बताया गया है। मैंने अपने बच्चों को विश्वास दिलाया कि मैं तो ज़रूर घबराऊंगा, इसलिए वे सावधानी के कदम उठाएं- जैसे 'मेज के नीचे छिप जाओ। इसके बाद हमने घरेलू शिक्षा देने वाले अन्य परिवारों के साथ पालो एल्टो के निकट एक फॉल्ट तक की शानदार यात्रा का आनंद लिया। उनके पिता सीएरा क्लब पर्यावरण समूह में शामिल थे। लॉस ट्रैंकॉस मार्ग से हमें उस क्षेत्र में भूकंपीय गतिविधियों का भूगर्भीय सुराग लगाने में मदद मिली। हमारे दोस्त और उनके बच्चों ने हमें स्थानीय पेड़-पौधों, तेंदुए, भेड़िए और जानवरों के गोबर को पहचानना सिखाया।

हम अपनी सुबह घर पर बिताते और दोपहर बाद इस तरह चीजें पहचानने के अभियान पर निकल जाते तथा दोस्तों के साथ खेलते। दिन भर में हमारे पास पढ़ने, लिखने या पत्रिकाओं में चित्र बनाने और ईस्ट कोस्ट के परंपरागत स्कूल में बच्चों के दाखिले के समय शैक्षिक वर्ष की शुरुआत से ही बचा कर रखे गए गणित के पाठ को समझने का भरपूर समय था। दोपहर बाद हम हाइकिंग करते, म्यूजियम और पार्कों में घूमते और घरेलू स्कूल के कम्युनिटी सेंटर में सांकेतिक भाषा तथा एकिडो के मार्शल आर्ट जैसे विषयों की कक्षाओं में जाते।

एलिसिया वैद्य कहती हैं, ''हमारे बच्चे का दिन पढ़ाई के साथ शुरू होता है। नाश्ते के बाद वह कुछ घंटों तक गणित के सवाल हल करता है। वह 11 वर्ष का हो गया है, इसलिए स्वयं समझता है कि उसे क्या करना चाहिए। मैं समय-समय पर स्वयं उससे उसके सवालों के जवाबों को जांचने के लिए कहती हूं। मैं भी हर सप्ताह उसके साथ सवाल हल करती हूं। तब वह मुझसे उन सवालों के बारे में पूछता है जिन्हें वह स्वयं हल नहीं कर पाता। हम गणित की सिंगापुर की पद्धति अपनाते हैं। इसके बाद वह लंच लेता है और फिर हम विज्ञान, लेखन अथवा इतिहास जैसा कोई विषय पढ़ते हैं। उसे संगीत से प्यार है, इसलिए वह दिन में एक घंटा पियानो बजाता है। इसके बाद हम संगीत या नृत्य सीखते हैं। सप्ताह में तीन दिन दोपहर बाद अपने दोस्तों के साथ पार्क में घूमने जाते हैं।'' वे इस बात से सहमत हैं कि घर पर शिक्षा देने में बच्चों के साथ समय बिताने का भरपूर लाभ मिलता है। इसके साथ ही बच्चों को स्कूल में होने वाली छेड़खानी से भी दूर रखना संभव हो जाता है। ''मैं मीठी गोली जैसी पढ़ाई में विश्वास नहीं करती हूं। अगर विषय वस्तु अपने-आप में रोचक है तो उसे अलग से रोचक बनाने की कोई ज़रूरत नहीं होनी चाहिए।''

चैसर ने प्रथम वर्ष के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम खरीदा लेकिन दूसरे वर्ष, ''बच्चे स्वयं अपनी पसंद बताने लगे और हमने उन्हें उसी के अनुसार चलने को कहा। मेरा बेटा स्कूल में मुश्किल से ही पढ़ता था। लेकिन, अब उसे पढ़ने में आनंद आता है। उसके पास पर्याप्त समय है, उसे कोई चिंता नहीं रहती और वह अपनी पसंद की पुस्तकें पढ़ता है। वह जिज्ञासु है। वह सीखना चाहता है जबकि इसके विपरीत उसे स्कूल में अच्छा ग्रेड लाने के लिए ज़बर्दस्ती पढ़ना पड़ता था।''

उनकी 8 वर्षीय बेटी 'अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसऑर्डर' से पीड़ित है। ''घर पर हर समय चलना-फिरना उसे बुरा नहीं लगता। पढ़ते समय वह प्ले-डो (मॉडलिंग क्ले) पकड़े रहती है। एक अनुभवी शिक्षक के रूप मैं जानती हूं कि अगर वह किसी परपंरागत स्कूल में पढ़ती तो हमसे उसे दवाइयां देने को कहा जाता। घर पर पढ़ाने के कारण हमें उसे दवाइयां नहीं देनी पड़तीं। वह बहुत स्मार्ट है, पढ़ना पसंद करती है और रचनात्मक प्रवृत्ति की है। वह कुछ करते रहना चाहती है। एक बहुत अच्छी अध्यापिका के पास आर्ट की कक्षा में जाती है। इस बार वसंत ऋतु में विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आर्ट समारोह में उसने प्रथम स्थान प्राप्त किया।''

चैसर के बेटे को यूनिवर्सिटी ऑफ़ इलिनॉय के एक प्रोफ़ेसर की गणित की छोटी, सामूहिक कक्षा में पढ़ना बहुत अच्छा लगता है। ''वह हमसे बच्चों के साथ बिलों का भुगतान करने को कहता है। ताकि वे जीवन की नियमित गतिविधियों के साथ गणित सीख सकें। हम जब किराना स्टोर में जाते हैं तो मैं अपने बेटे से बिल का हिसाब लगवाता हूं। इससे उसे चीज़ों की कीमत का भी पता लगता है।''

वह कहती हैं, ''मैं प्रतिदिन अपने बच्चों के साथ कुछ अच्छे और सोचने-समझने लायक पल बिताना चाहता हूं। मुझे यह भी याद आता है कि जब मैं शिक्षक था तो 20 या 30 बच्चों की कक्षा में ऐसा करना कितना मुश्किल काम था। यह संभव ही नहीं था।''

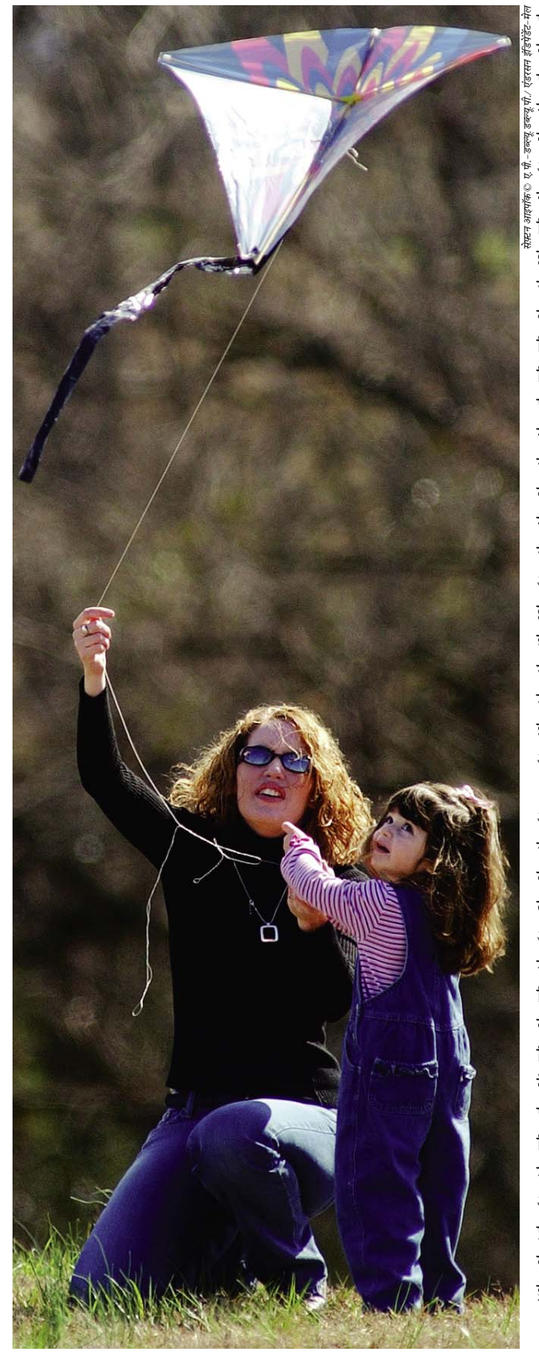

पेटन अशोकमैन © पी. ब्लैक ब्लैक पी. / पेटन अशोकमैन-नेट-पीबी

साउथ कैरोलाइना में एंड्रिया मूर और उनकी पुत्री एमिली होमस्कूलिंग समूह के अन्य सदस्यों के साथ मनोरंजन के लिए पतंग उड़ाते हुए।

जब बच्चे बड़ी कक्षाओं में चले जाते हैं तो ग्रेजुएशन का सवाल सामने आता है। परिवार को यह पता कैसे लगे कि बच्चा सब कुछ 'सीख' चुका है? घर पर हाईस्कूल की पढ़ाई करने के बाद राज्य के नियमों के अनुसार ग्रेजुएशन करने में अंतर होता है। लेकिन, अधिकांश मामलों में घरेलू स्कूलों को छोटे से प्राइवेट स्कूल के समान मान लिया जाता है और स्कूल प्रशासकों द्वारा हाईस्कूल का डिप्लोमा दिया जाता है। घरेलू स्कूल के मामले में यह काम माता-पिता करते हैं। उदाहरण के लिए, कोलोरैडो में कोई राज्यस्तरीय डिप्लोमा नहीं है और जो बच्चे पब्लिक हाईस्कूल में पढ़ते हैं, उन्हें स्थानीय स्कूल जिले डिप्लोमा दिए जाते हैं। घर के स्कूल में पढ़ाई का कार्यक्रम पूरा होने के बाद माता-पिता स्वयं डिप्लोमा देते हैं। कोलोरैडो में जनरल एजुकेशन डेवलपमेंट टेस्ट आम तौर पर ऐसे वयस्क लोगों के द्वारा लिए जाते हैं जिनके पास हाईस्कूल डिप्लोमा नहीं होता और वे यह प्रमाणित नहीं कर सकते हैं कि उनमें हाईस्कूल की शैक्षिक दक्षता है, इसलिए वहां इस तरह के टेस्ट लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

कॉलेजों को एक ऐसी ट्रांस्क्रिप्ट की आवश्यकता पड़ती है जिसमें यह जानकारी होनी चाहिए कि विद्यार्थी ने कौनसे कोर्स चुने हैं और 'क्रेडिट ऑवर' तथा ग्रेड कितने हैं। स्टैंडर्ड टेस्ट में प्राप्त अंक, इंटरव्यू तथा संस्तुतियां भी महत्वपूर्ण हैं। जिन विद्यार्थियों ने घर में शिक्षा प्राप्त की है उनके ग्रेड के बजाय कॉलेज इस बात पर अधिक ध्यान देते हैं कि उन्होंने क्या और कौन-सा विषय कैसे पढ़ा। यह उन परिवारों के पोर्टफोलियो से पता चल जाता है। विलियम्स कॉलेज के एसोसिएट डायरेक्टर ऑफ एडमिशन फॉर आपरेशंस कोनी शीही 'बोस्टन ग्लोब' में प्रकाशित अपने एक लेख में समझाते हुए कहती हैं, ''हम घर में शिक्षा प्राप्त किए हुए विद्यार्थियों के आवेदन पत्रों को अन्य आवेदन पत्रों के समान ही देखते हैं। उन पर अलग से कोई विशेष विचार नहीं किया जाता। और न दूसरों की तुलना में अलग समझा जाता है। उनके आवेदन पत्र बहुत अच्छे होते हैं और यह पता चलता है कि उन्होंने जीवन में अपने बलबूते पर ही सारा काम किया है।''

कॉलेजों की दिलचस्पी घर पर पढ़े बच्चों के ग्रेड जानने के बजाय इसमें ज़्यादा होती है कि उन्होंने क्या पढ़ा है और कौनसे विषय की शिक्षा हासिल की है।

शिक्षा विभाग के 2003 के अध्ययन में घर पर शिक्षा प्राप्त ग्रेजुएटों की विश्वविद्यालय में उपस्थिति की जानकारी नहीं दी गई है, लेकिन कॉलेज एडमिशन ऑफिसों से ऐसे विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या का पता लगता है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय अपने-आप को 'घर पर शिक्षितों का मित्र' बताता है, लेकिन ऐसे आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं जिनसे यह पता लग सकें कि उसने हर साल कितने ऐसे विद्यार्थियों को दाखिला दिया जो घर पर शिक्षित हुए।

वैद्य परिवार के बेटे को इस बार पतझड़ में सावधानी से चुने गए एक प्राइवेट स्कूल में छठे ग्रेड की कक्षा में दाखिला मिला है। माता-पिता को विश्वास है कि उसे वहां मेलजोल और सहयोग का चुनौती भरा शैक्षिक वातावरण मिलेगा। वह वहां ऑर्केस्ट्रा में भी भाग लेना चाहता है।

उधर इलिनॉय में चैसर कुछ और वर्षों तक घर पर पढ़ाना जारी रखना चाहती हैं जिसके बाद वह अपने बेटे से पूछेंगी कि क्या वह परंपरागत स्कूल में पढ़ना चाहेगा। वह स्वीकार करती हैं, ''कुछ चीज़ें ऐसी ज़रूर हैं जिनका अनुभव पब्लिक स्कूल में पढ़े बिना नहीं मिल सकता। लेकिन, मैं यह सब उस पर छोड़ दूंगी।''

पहले वर्ष घर पर पढ़ाने के बाद हमें अपने बच्चे के लिए एक ऐसे स्कूल का पता लगा जिसमें माता-पिता और प्रशासन दोनों की भागीदारी थी। हम अपने बच्चे को जो संपूर्ण शिक्षा, करो और सीखो की प्रेरणा तथा स्वयं योजना बना कर भरपूर फील्ड भ्रमण करने का उत्साह देना चाहते थे, वह स्कूल भी वही कर रहा था और, इधर ईस्ट कोस्ट में हमारे बच्चे पुन: अपने पड़ोस के स्कूल में पढ़ रहे हैं। घर पर शिक्षा देने से परंपरागत शिक्षा के बारे में हमारे परिवार के विश्वासों को चुनौती मिली और इससे मेरा यह ज्ञान बढ़ा कि हम क्यों और कैसे सीखते हैं।

***जेन वार्नर मल्होत्रा** स्वतंत्र लेखिका हैं और वॉशिंगटन डी.सी. में रहती हैं।*